श्री धर्मपुरी लक्ष्मी नरसिंहगीतिकाः

Shri Dharmapuri Lakshminarasimha gitika

sanskritdocuments.org

February 24, 2018

Shri Dharmapuri Lakshminarasimha gitika

श्री धर्मपुरी लक्ष्मी नरसिंहगीतिकाः

Sanskrit Document Information

Text title : dharmapurIlakShmInarasiMhagItikAH

File name : dharmapurIlakShmInarasiMhagItikAH.itx

Category : vishhnu, koriDevishvanAthasharmA, suprabhAta, devii

Location : doc_vishhnu

Author : koriDe vishvanAthasharmA, dharmapurI

Transliterated by : koriDe vishvanAthasharmA

Proofread by : koriDe vishvanAthasharmA

Acknowledge-Permission: Koride Vishwanatha Sharma

Latest update : February 24, 2018

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

February 24, 2018

sanskritdocuments.org

श्री धर्मपुरी लक्ष्मी नरसिंहगीतिका:

ॐ गँ गणपतये नमः ॥

हरिनराकृतिं सैंहिकाननं
  जलधिपुत्रिका सेविताङ्घ्रिकम् ।
भरणभूषितं भूषित प्रभम्
  नरहरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ १॥

हरिवराननं घातुकान्तकं
  श्रितजयप्रदं चक्रधारिणम् ।
भुजगशायिनं भूरिदायिनं
  नरहरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ २॥

ऋषिवराश्रितं ऋग्भिरर्चितं
  विदितवेद्यकं वेदगम्यकम् ।
श्रितवरार्थिने कल्पवृक्षकं
  नरहरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ३॥

दितिजबालकप्राणरक्षणे
  दितिजमन्दिरे स्तम्भसम्भवम् ।
द्विजबुधैः सदा पूजितं स्तवैः
  नरहरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ४॥

सुजनभक्तकान् सक्तरक्षकं
  कुजनशिक्षणे सक्तचित्तकम् ।
मकरमौखिकात् नागरक्षकं
  नरहरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ५॥

सुरपतेः सुखात्सञ्चयाघगां
  मुनिसतीं वरां पादुकोद्धृतम् ।

निरतभाविनां पापनाशकं
नरहरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ६॥

विहितपापधिं कालकालगं
हरिरितीरितं निर्मलङ्करम् ।
यदियमुच्यतेऽजामिळादिना
नरहरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ७॥

निगमरक्षणे मत्स्यकायिनं
अमृतसाधने कूर्मवेषिनम् ।
अवनिपालने श्रीवराहकं
नरहरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ८॥

दनुजमारणे सैंहिकाननं
बलिविमर्दने वामनाकृतिम् ।
कुपतिभञ्जने भार्गवद्विजं
नरहरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ९॥

रघुकुलोद्भवं रावणान्तकं
द्रुपदजावने कृष्णरूपिणम् ।
शमनसाधने बुद्धरूपिणं
नरहरिं भजेधर्मपूर्विभुम् ॥ १०॥

कलिविमर्दने कल्किदेहिनं
अभयरूपिणं आश्रिताश्रयम् ।
नतमुखोऽस्म्यहं नैकधाकृतिं
नरहरिं भजेधर्मपूर्विभुम् ॥ ११॥

Composed by Koride Vishwanatha Sharma, Dharmapuri, Telangana
Proofread by Koride Vishwanatha Sharma.

Shri Dharmapuri Lakshminarasimha gitika
pdf was typeset on February 24, 2018

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*